रात्रिक्लास 26/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

म्युज़ियम वा प्रदर्शनी में समझाना है; क्योंकि सभी हैं बेसमझ। यह तुम समझते हो कि यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। समझदार तो सिर्फ़ तुम ही हो। तो तुमको समझाना पड़ता है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। सबसे जास्ती सर्विस स्थान है म्युज़ियम। वहां बहुत आते हैं। अच्छे सर्विसएबुल बच्चे भी बहुत कम हैं। सर्विस स्टेशन सभी सेन्टर्स से है देहली में स्प्रीचुअल म्युज़ियम। इस अक्षर का भी ठीक अर्थ निकलता नहीं है। पूछते हैं आप भारत की क्या सेवा कर रहे हो? हैं तो जंगली लोग। भगवानुवाच है ना यह जंगल है। तुम संगमयुग पर हो। न फॉरेस्ट के हो, न गार्डेन के हो। अभी गार्डेन में जाने पुरुषार्थ कर रहे हो। अभी इस रावण राज्य को रामराज्य बना रहे हो। तुमसे पूछते हैं इतना खर्चा कहां से आता है? बोले यह तो हम ब्रह्मा कुमार–कुमारियां ही करते हैं। रामराज्य की स्थापना हो रही है। तुम नहीं जानते हो हम क्या कर रहे हैं। आकर समझो हम क्या कर रहे हैं। एमऑबजेक्ट क्या है। सॉवरन्टी को मानते नहीं; इसलिए सारवन को भगा दिया। तभी तुम तमोप्रधान गन्दे बन गये हो। तो वह भी अच्छी नहीं लगी। ड्रामा अनुसार उन्हों का भी दोष नहीं। ड्रामा में जो कुछ होता है वह हम पार्ट बजाते हैं। कल्प–2 यह पार्ट चलता है बाप द्वारा स्थापना का। खर्चा भी तुम बच्चे ही करते हो। अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हो। और तो किसको पता भी नहीं है। तुम्हारा नाम मशहूर है अननोन वारियर्स। अननोन वारियर्स कब होती नहीं है। अननोन वारियर्स तो बहुत हो न सके। सिपाही लोग का तो सारा रिजस्टर रहता है ना। ऐसा तो कोई हो न सके जिसका नाम नम्बर न हो रजिस्टर में। अननोन वारियर्स तो तुम हो। तुम्हारा कोई रजिस्टर में नम्बर नहीं, कोई हथियार पवार भी नहीं। जिस्मानी हिंसा तो है नहीं। योगबल से तुम विश्व पर जीत पहनते हो। ईश्वर सर्वशक्तिवान है ना। याद से तुम शक्ति ले रहे हो। सतोप्रधान बनने लिए तुम बाप से योग लगा रहे हो। सतोप्रधान बने फिर सतोप्रधान राज्य चाहिए। सो तो तुम स्थापन कर रहे हो। किसके मत पर? वह भी है गुप्त। निराकार को गुप्त भी कहा जाता है। जब आकर इनमें प्रवेश करते हैं। नहीं तो गुप्त उनको कहा जाता है जो; परंतु देखने में न आता हो। शिवबाबा भी है पर इन आँखों से नहीं देख सकते हो। तुम भी गुप्त बाप भी गुप्त, उनसे शक्ति ले रहे हो। बच्चे जानते हैं हम पतित से पावन बनते हैं। पावन में शक्ति होती है ना। सतयुग में पावन होंगे। उन्हों की ही 84 जन्मों की कहानी बाप बताते हैं। बाप से शक्ति ले, पवित्र बन फिर से पवित्र दुनियां का राज–भाग ले रहे हो। बाहुबल से कब कोई विश्व पर जीत पहन न सके। यह है योगबल की बात। वह लड़ते हैं ,राज्य तुम्हारे हाथ में आता है। तुम्हारी है सारी योगबल की बात। सर्वशक्तिवान बाप है उनसे शक्ति मिलनी चाहिए। यहां बैठे तो हो तुम बाप को और रचना के आदि, मध्य, अंत को जानते हो। तुम जानते हो हम स्वदर्शन चक्रधारी बन रहे हैं। कोई को स्मृति है, कोई को नहीं। सभी को नहीं रहती। यह स्मृति होनी चाहिए सृष्टि के आदि, मध्य, अंत रचयिता और रचना को हम जानते हैं। तुम बच्चों को ही नॉलेज मिलती है। बाहर वाला तो कोई समझ न सके; इसलिए बुलाया नहीं जाता है। पतित–पावन बाप को सभी पुकारते हैं ; परन्तु अपन को पतित समझते नहीं हैं। ऐसे ही तोते मिसल बोलते रहते हैं । यह भी नहीं जानते पावन दुनियां और यह पतित दुनियां है। गाते रहते हैं पतित–पावन.....गांधी जी गीता भी लेते थे। पिछाड़ी में भोग उल्टा लगाते थे। सभी हैं ब्राईड्स, बाप है ब्राइड्ग्रूम। वह आते ही हैं सर्व की सद्गति करने। तुम बच्चों को श्रृंगार कराते हैं। तुमको डबल इंजन मिली है ना। ऊँच ते ऊँच चढ़ाई होती है तो दो लगाते हैं। बाप बड़ी इंजन है रोल्स रायल्स। रोल्स रायल्स में इंजन बड़ी अच्छी होती है। बाप भी ऐसे ही हैं। कहते हैं हे पतित–पावन आओ, हम सभी को ले जाओ। पतित को पावन बनाकर साथ में ले जाओ। तुम बैठे हो बिगर झांझ बजाये। तकलीफ की कोई बात नहीं। बाप को याद करते रहो, जो मिले रास्ता बताते रहो। (बिच्छू का मिसाल) बाप कहते हैं मेरे जो भक्त हैं। ल.ना. के भक्त, कृष्ण के भक्त हों, राम के भक्त हों उनको यह दान देना। व्यर्थ न गँवाना। पात्र

को ही दान दिया जाता है। पतित मनुष्य तो पतितों को दान देते रहते हैं। पतित को दान देने से पातित ही बनेंगे। और ही कदम नीचे उतरना पड़ता है। अभी तुम समझते हो ड्रामाप्लैन अनुसार बाप खुद आकर समझाते हैं। वास्तव में मैं शक्तिवान नहीं हूँ। राम और रावण। वह डुबोते हैं, वह चढ़ाते हैं। वह विकार में जाकर गिरते ही जाते हैं। रावण सभी को डुबाते हैं। बाप है सर्वशक्तिवान। उनसे तुम शक्ति लेकर सभी को उत्तम बनाते हो। रावण कब आते हैं वह भी संगम हुआ कलयुग और सतयुग का। वह फिर होगा त्रेता और द्वापर। वह दिन वह रात। ब्रह्मा का दिन–रात यह अक्षर शास्त्रों में हैं। सुनाते भी है ज्ञान ब्रह्मा का दिन, भक्ति ब्रह्मा की रात। ज्ञान कितना समय, भक्ति कितना समय चलती है वह भी समझते नहीं। तो यह सभी बातें समझकर फिर समझाते हैं। मुख्य बात है बेहद के बाप को याद करो। बेहद का बाप आते हैं तो पुरानी दुनियां का विनाश होता है। महाभारत लड़ाई कब लगी? जब मैंने राजयोग सिखाया था। समझ में आता है नई दुनिया का आदि, पुरानी दुनियां का अंत है। दुनियां तो घोर अंधियारे में पड़ी है। अभी उनको जगाना है। आधा कल्प सोये पड़े हैं। बाप समझते हैं अपन को आत्मा समझ भाई–2 को देखो। भाई को ज्ञान दो तो तुम्हारे वाणी में ताकत भरेगी। आत्मा ही पावन और पतित बनती है। आत्मा पावन बनती है तो शरीर भी पावन मिलती है। अभी तो मिल न सके। पवित्र तो सभी को बनना है। कोई योगबल से , कोई सज़ा से। मेहनत ही है याद की यात्रा में। बाबा बार–2 समझाते रहते हैं। बच्चों को प्रैक्टिस भी कराते हैं। सिखलाते हैं कहां भी जाओ तो बाप की याद में जाओ। जैसे पादरी लोग शान्ति में क्राइस्ट के याद में जाते हैं। वह क्राइस्ट को याद करते हैं। पोप भल बड़ा है; परन्तु क्राइस्ट को याद करते हैं। यहां भारतवासी तो अनेकों को याद करते रहते हैं। बाप कहते हैं एक सिवाय और कोई को याद न करो। बेहद के बाप से मुक्ति–जीवनमुक्ति का वर्सा का हम हकदार हैं। सेकण्ड में जीवनमुक्ति तो मिलती ही है। सतयुग में सभी जीवन मुक्त थे। कलयुग में सभी जीवन बंधन में हैं। यह किसको भी पता नहीं है। न शास्त्रों में है; इसलिए बाप कहते हैं भक्ति के शास्त्र सुनो ही नहीं। भक्ति तो आधा कल्प की, अभी तो संगमयुग है। बाप आकर ज्ञान सिखलाते हैं। गायन है भगवान आकर फल देते हैं जीवनमुक्ति का। यह बातें समझकर और समझाना है। बाप बच्चों को समझाते हैं। बच्चे फिर बाप का शो करने चारों तरफ चक्र लगाते रहते हैं। तुम्हारा फर्ज़ है। मनुष्य मात्र को यह मालूम होना चाहिए यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो सभी पाप कट जावेंगे। यह है सच्ची गीता, जो बाप समझाते हैं। वह भक्ति मार्ग की गीता पढ़ते–2 यह हाल हुआ है। मनुष्य मत से कैसे गिरे हैं और भगवान के मत से तुम वर्सा ले रहे हो। मूल बात बाप समझाते हैं उठते–बैठते, चलते–फिरते बाप को याद भी करते रहो और परिचय भी देते रहो। बैज तो है ना। फ्री देने में हर्जा नहीं है; परन्तु पात्र देखकर देना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बाप ही बतलाते हैं। बाप बच्चों को डोरापा देते हैं तुम लौकिक बाप को भी याद करते हो, पालौकिक बाप को भूल जाते हो। लज्जा नहीं आती? तुम पवित्र प्रवृत्ति गृहस्थ व्यवहार में थे फिर अभी पवित्र बनना है। तुम हो भगवान के सागिरद्(स्टूडेन्ट)। अपने अन्दर देखो कहां बुद्धि भटकती तो नहीं है। बाप को कितना समय याद किया। वह गटर वैश्यालय में ले जाते हैं। बाप शिवालय में ले जाते हैं। बाप समझाते हैं और संग तोड़ो और एक संग जोड़ो। भूल नहीं करनी है।

यह भी समझाया है भाई–2 के दृष्टि से देखो तो देह न देखेंगे। दृष्टि बिगड़ेगी नहीं। मंज़िल है ना। यह ज्ञान अभी ही तुमको मिलता है। भाई–2 तो सभी कहते हैं। मनुष्य कहते हैं ब्रदरहुड। यह तो ठीक है परमपिता परमात्मा के हम संतान हैं। फिर यहां क्यों बैठे हैं? बाप स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। तो

ऐसे–2 समझाते उन्नति को प्राप्त करते रहो। बाप को सर्विसएबुल बच्चियां बहुत चाहिए। सेन्टर्स खुलते जाते हैं। समझते हैं बहुतों का कल्याण होगा; परन्तु सेन्टर सम्भालने वाली भी चाहिए। सर्विसएबुल अच्छी महारथी चाहिए। टीचर्स में भी नम्बरवार हैं ना। म्युज़ियम में भी बहुत अच्छी–2 चाहिए। बाप कहते हैं जहां ल.ना. का मंदिर हो, शिव का मंदिर हो, गंगा का कंठा हो, जहां भीड़ भी होती हो वहां सर्विस करनी है। समझाओ तुमने कोसघर खोला है। भगवान कहते हैं काम महाशत्रु है। तुम फिर यह बनाकर देते हो। यह तो तुम पापात्माएं हो; क्योंकि तुमने बनाकर दिया है। ऐसे–2 समझाकर हाल लो। पहले किराया दे। फिर समझते–2 आपे ही दे देंगे। वह समझते हैं पुण्य का काम है और तुम समझाते हो यह पाप का काम है। उन्हों को चिट्ठी लिख समझाओ तो हाल तुमको मिलेंगे। श्रीमत पर पुरुषार्थ करना है। यहां तुम ईश्वर के घर में हो। सात रोज़ भट्ठी में रहते हो। जो परिवार के साथ रहते हो। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते।